(b) how many tonnes of wheat have been procured so far by Governmental agencies and at what price ?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ANNASAHEB SHINDE) : (a) Firm estimates of production of cereals for 1972-73 would become available only at the close of the agricultural year *i.e.*, some time in July-August, 1973. The over-all production of foodgrains during 1972-73 May, however, be lower than that of 1971-72.

(b) About 3.08 lakh tonnes of wheat has been reported to have been procured by all governmental agencies till 28th April, 1973. The procurement prices of different varie-abroad:—

Variety	(Rs. per quintal)
(i) Indigenous red . .	71 to 74
(ii) Indigenous common white and different Mexican varieties	76
(iii) Specified superior variety .	82

भारतीय संस्कृति का प्रचार

163. **श्री जगदम्बी प्रसाद यादव** : क्या शिक्षा समाज कल्याण तथा संस्कृति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि देश में और विदेशों में भारतीय संस्कृति और परम्परा के प्रचार के लिये क्या कदम उठाये गये हैं अथवा उठाये जा रहे हैं ?

†[PROPAGATION OF INDIAN CULTURE

163. SHRI J. P. YADAV : Will the Minister of EDUCATION, SOCIAL WELFARE AND CULTURE be pleased to state the steps taken or are proposed to be taken for the propagation of the Indian culture and traditions in this country and abroad ?]

शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय तथा संस्कृति विभाग में उपमंत्री (श्री डी० पी० यादव) : विवरण संलग्न है ।

†[ ] English translation.

विवरण

भारत और विदेशों में, भारतीय संस्कृति और परम्पराओं के प्रचार के लिए, सरकार द्वारा उठाए गए अथवा उठाए जाने वाले कदमों में से कुछ महत्वपूर्ण कदम इस प्रकार है

(i) भारतीय संस्कृति को प्रोत्साहित तथा उसका प्रसार करने के लिए तीन राष्ट्रीय अकादमियों अर्थात् संगीत नाटक अकादमी, साहित्य अकादमी और ललित कला अकादमी स्थापित की गई है ।

(ii) भवन तथा सभा कक्ष आदि के निर्माण के लिए विभिन्न सांस्कृतिक संगठनों को जो इसके पात्र है तथा प्रदर्शन मंडलियों/दलों को, नृत्य, नाटक तथा थियेटर के क्षेत्र में, विकास कार्यकलापों तथा उनकी उपजीविका के लिए वित्तीय सहायता दी जाती है ।

(iii) "कालेजों तथा स्कूलों के छात्रों में संस्कृति के प्रचार" की योजना के अधीन, देश के विभिन्न भागों से लिए गए अध्यापकों को, भारतीय कला और संस्कृति के अनेक पहलुओं पर पुनश्चर्या पाठ्यक्रमों में प्रशिक्षण दिया जाता है । इस प्रकार के अध्यापक उसके बदले में अपने अधीन छात्रों को प्रशिक्षण देते है । किटों के, जिनमें प्रोजेक्टर, स्लाइडे, प्रिंट फोटो चित्रों के एलबम, मूर्तियां, वास्तुकला, भारतीय शास्त्रीय तथा लोक संगीत नृत्य तथा थियेटर के डिस्क/टेप आदि होते है, इन कालेजों और स्कूलों को मुहैया किए जाएंगे ।

(iv) व्याख्यानों, सेमिनारों, फिल्म शो का आयोजन करने तथा जीवन संस्कृति सामाजिक आर्थिक विकास आदि के बारे में छात्रों और अध्यापकों को हमारी मिश्रित संस्कृति और सभ्यता के विभिन्न पहलुओं से अवगत कराने के लिए व्यवस्था करने हेतु विश्वविद्यालयों और कालेजों में राष्ट्रीय एकता समितियां स्थापित की जाएंगी ।

(v) जिला मुख्यालयों में स्थापित किए जाने वाले नेहरू युवक केन्द्रों का मुख्य उद्देश्य है, वैज्ञानिक अभिवृत्ति के विकास पर जोर

देते हुए युवकों के सभी वर्गों के लिए स्कूल के बाहर शिक्षा का आयोजन करना सामूहिक गायन तथा थियेटर सहित तथा अवकाश के समय का रचनात्मक कार्यो मे लगाने के अवसर प्रदान करने प्रदर्शन कलाओं मे भाग लेने के जरिए, रचानत्मक कार्यशालाओं के लिये सुविधाओं की व्यवस्था करना।

(vi) देश मे सांस्कृतिक मूल्यों को बाढावा देने के लिए, दिल्ली मे एक सांस्कृतिक भवन स्थापित करने का विचार है।

(vii) प्रदर्शन, रूपकर तथा साहित्यिक कलाओं के क्षेत्रों मे संस्थाए स्थापित करने का प्रश्न सरकार के विचाराधीन है।

(viii) देश मे भावात्मक तथा सास्कृतिक एकता को प्रोत्साहित करने के लिए अन्तर राज्य सांस्कृतिक मण्डलियों के विनियम की योजना भी शुरू करने का विचार है।

(ix) भारत सरकार तथा भारतीय सास्कृतिक सबंध परिषद् सद्भावना तथा अभिभाषण दौरो आदि पर भारतीय अध्येताओं, कलाकारो सुविज्ञो विशेषज्ञों तथा नृत्य और संगीत मण्डलियों को विदेशो को भेजना है। प्रदर्शन कलाओं, रूपकर कलाओं, रचनात्मक कलाओं, पुस्तकों और हस्तशिल्पो के क्षेत्रो मे विदेशो को प्रदर्शनियां भेजी जा रही है।

(x) भारतीय सांस्कृतिक सम्पर्क परिषद् भारतीय जीवन और संस्कृति के विभिन्न पहलुओं की विदेशो मे बेहतर जानकारी उपलब्ध कराने की दृष्टि से पुस्तकों और पत्रिकाओं का विदेशी भावनाओं मे प्रकाशन करती है।

(xi) विदेश अध्येताओं को और अध्ययन करने और भारतीय संस्कृति के विभिन्न पहलुओं मे प्रशिक्षण के लिए अनुसधान अनुदान और छात्र-वृत्तिया प्रदान की जाती है।

(xii) सुवा (फीजी), जार्जटाऊन (गियाना) और सेन-फासिसको (स० स० अ०) मे भारतीय सांस्कृतिक केन्द्रों ने पहले से ही कार्य करना आरम्भ कर दिया है। इसी प्रकार के केन्द्रों को वर्ष 1973-74 में थाईलैन्ड, सुमिनम और पेरू मे स्थापित करने का प्रस्ताव है।

(xiii) ईरान, त्रिनिदाद, रूमानिया, सिंगापुर, पोलैन्ड लाओस, थाईलैन्ड और वियाना मे भारतीय, अध्ययन पीठ (संस्थाए) स्थापित की गई है। युगोस्लाविया और बुलगारिया के लिए प्रोफेसर का चयन भी हो चुका है। मिस्र, दक्षिण कोरिया, ईराक, बगला देश और जर्मन जनवादी गणतत्र मे भी 1973-74 मे अध्ययन पीठ स्थापित करने का प्रस्ताव है।

(xiv) भारतीय सांस्कृतिक सम्पर्क परिषद् ने इन्डोनेशिया और लेबनान मे भारतीय अध्ययन केन्द्रों की स्थापना की है। अफगानिस्तान, मेक्सिको और सेनेगल के लिए प्रोफेसरो का भी चयन हो चुका है। ब्राजील, सोवियत रूस और अर्जेंटाइना मे वर्ष 1973-74 मे केन्द्र स्थापित करने का प्रस्ताव है।

(xv) विदेशो में भारतीय दूतावास भारत की पुस्तको और पत्रिकाओं के लिए पुस्तकालयों और अध्ययन कक्षों तथा फिल्म टेप और ग्रामाफोन रिकार्डों की पुस्तकालयों का अनुरक्षण करते है। इनके द्वारा ये स्थानीय स्कूलों, कालजो तथा अन्य संस्थाओं को उधार दी जाती है। दूतावास फिल्म शो का आयोजन भी करते है।

(xvi) स्थानीय संस्थाओं के प्रस्तुतीकरण के लिए अथवा दूतावासो और स्थानीय सगठनो द्वारा आयोजित प्रदर्शनियो मे भाग लेने के लिए विदेशो मे भारतीय दूतावासो को पुस्तके संगीतात्मक उपकरण, कलात्मक पुनरुत्पत्तिया, बच्चो की चित्रकलाओं सहित चित्रकलाए, प्रादेशिक वेषभूषा मे भारतीय गुड़िया, हस्तशिल्प, फिल्मे तथा भारतीय संगीत के टेप्स और ग्रामोफोन रिकार्ड चित्र आदि सप्लाई किए जाते है।

(xvii) भारत के दौरे पर आने वाले बहुधा विदेशी पत्रकारों और टी० वी० दलों और फोटोग्राफरों को राजकीय अतिथियों के रूप

मे समझा जाता है और उन्हे स्थानीय अथित्य-सत्कार प्रदान किया जाता है । इस प्रकार से विदेशो मे भारत का सजीव चित्र प्रस्तुत करने मे उनकी सहायता की जाती है ।

(xviii) पर्यटन विभाग का समुद्रपार प्रमार कार्यक्रम है जिसका उद्देश्य हमारी सास्कृतिक विरास्त-शास्त्रीय तथा लोक नत्य, ऐतिहासिक स्मारको, मन्दिरो, कलाओ और शिल्पो पर केन्द्रित अवकाश वाले दिन गन्तव्य (स्थान) के रूप मे विदेशो मे भारत के सजीव चित्रण को प्रस्तुत करने का उद्देश्य है ।

(xix) पर्यटन विभाग द्वारा प्रायोजित ध्वनि तथा लाइट शो भी सास्कृतिक इतिहास के पहलुओ पर प्रकाश डालते हैं ।

†[THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF EDUCATION AND SOCIAL WELFARE AND IN THE DEPARTMENT OF CULTURE (SHRI D. P. YADAV): A statement is attached.

STATEMENT

The following are some of the important steps taken or are proposed to be taken by the Government for the propagation of the Indian culture and traditions in India and abroad :

(i) Three National Akademies viz. Sangeet Natak Akademi, Sahitya Akademi and Lalit Kala Akademi have been set up to encourage and promote Indian culture.

(ii) Financial assistance is given to various eligible cultural organisations for the construction of buildings, auditorium etc. and to the performing troupes/groups in the field of dance-drama and theatre for their sustenance and development activities

(iii) Under the Scheme of 'Propagation of Culture among college and school students' teachers drawn from colleges and schools in various parts of the country are given refresher courses on many aspects of Indian art and culture. Such teachers in turn impart training to the students under their charge.

Kits containing a projector, slides, photographs, albums of paintings, sculptures, architecture etc., disc/tapes of Indian classical and folk music, dance and theatre etc will be supplied to such colleges and schools.

(iv) National Integration Samitis will be set up in universities and colleges to organise lectures, seminars, film shows and provide information regarding life, culture, socio-economic development etc. to students and teachers to familiarise them with the diverse perspectives of our composite culture and civilisation.

(v) Nehru Yovak Kendras, proposed to be set up at district headquarters, are primarily designed to organise out of school education for all sections of youth with emphasis on development of scientific attitude, provide facilities for creative activities through participation in performing arts, including community singing and theatre and opportunities for constructive use of leisure time and youth participation in community work etc.

(vi) A Cultural Complex for the promotion of cultural values in the country is proposed to be set up in Delhi.

(vii) The establishment of institutions in the fields of performing, plastic and literary arts is under consideration of the Government.

(viii) A scheme of Inter-State Exchange of Cultural Troupes for the promotion of emotional and cultural integration in the country is proposed to be launched.

(ix) The Government of India and the Indian Council for Cultural Relations have been sending Indian scholars, artists, experts specialists and dance and music troupes to foreign countries on goodwill-cum-lecture tours etc.

†[ ] English translation.

Exhibitions in the fields of performing arts, plastic arts, creative arts, books and handicrafts are being sent abroad.

(x) Indian Council for Cultural Relations undertakes publication of books and journals in foreign languages with a view to making the various aspects of Indian life and culture better known abroad

(xi) Foreign scholars are awarded research grants and Scholarships for further studies and training in different aspects of Indian culture.

(xii) Indian Cultural Centres have already started functioning in Suva (Fiji) Georgetown (Guyana) and San Francisco (USA). During 1973-74, similar Centres are proposed to be set up in Thailand, Surinam and Peru.

(xiii) Chairs of Indian studies have been established in Iran, Trinidad, Rumania, Singapore, Poland, Laos, Thailand and Guyana Selections have also been made of Professors for Yugoslavia and Bulgaria. Chairs are also proposed to be established in Egypt, South Korea, Iraq, Bangladesh and German Democratice Republic in 1973-74.

(xiv) Indian Council for Cultural Relations has set up Centres of Indian Studies at Indonesia and Lebanon. Professors have also been selected for Afghanistan, Mexico and Senegal. Centres at Brazil, U.S.S.R. and Argentina are proposed to be established in 1973-74.

(xv) Indian Missions abroad maintain libraries and reading rooms for books and periodicals on India; libraries of films, tapes and gramophone records. These are loaned out by them to the local schools, colleges and other institutions. The Missions also hold film shows.

(xvi) Books, musical instruments, art reproductions, paintings, including children's paintings, Indian dolls in regional costumes, handicrafts, films, tapes and gramophone records of Indian music, photographs etc. are supplied to Indian Missions abroad for presentation to local institutions or for participation in exhibitions organised by the Missions and the local organisations.

(xvii) Most of the foreign journalists, TV teams and photographers on their visit to India are treated as Government guests and are given local hospitality. They are thus assisted in the presentation of India's image abroad.

(xviii) The Department of Tourism has an overseas publicity programme which aims at projecting India's image abroad as a holiday destination with a focus on our cultural heritage—classical and folk dances, historical monuments, temples, arts and crafts.

(xix) The Sound and Light shows sponsored by the Department of Tourism also recreate aspects of cultural history.]

परिवार नियोजन कार्यक्रमो का पुनर्मूल्यांकन

164. **श्री जगदम्बी प्रसाद यादव** : क्या **स्वास्थ्य और परिवार नियोजन** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि क्या परिवार नियोजन कार्यक्रमो मे सुधार लाने के लिये अब तक कोई पुनरीक्षण किया गया है अथवा किये जाने का विचार है ?

†[REVALUATION OF FAMILY PLANNING

164. SHRI J. P. YADAV: Will the Minister of HEALTH AND FAMILY PLANNING be pleased to state whether any review has been made so far or is proposed to be made in order to bring about improvement in the Family Planning Programmes?]

स्वास्थ्य और परिवार नियोजन मंत्रालय में उपमंत्री (श्री ए० के० किस्कू) : जी हा । परिवार नियोजन कार्यक्रम की कार्य प्रणाली मे सुधार करने के लिये समय-समय पर इसका पुरीक्षण किया जा रहा है ।

†[ ] English translation.